

IV. मौद्रिक और चलनिधि की स्थिति

इस वित्तीय वर्ष में अब तक मौद्रिक नीति में चलनिधि सुलभता और नीतिगत दर में कटौती के लिए नपेतुले मिश्रित उपायों के माध्यम से वृद्धि-मुद्रास्फीति गत्यात्मकता को संतुलित करने की योजना बनाई गई है। जहां सीआरआर के लिए समायोजित आरक्षित मुद्रा वृद्धि ने ति3 के दौरान उपयुक्त गति बनाए रखी, वहीं व्यापक मुद्रा वृद्धि सांकेतिक स्तर से नीचे बनी रही। मंद गतिविधियों और बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में गिरावट के कारण ऋण विस्तार कम रहने के बावजूद समग्र जमा वृद्धि ऋण वृद्धि से कम रही। रिज़र्व बैंक द्वारा सीआरआर कटौती और सरकारी प्रतिभूतियों की खुले बाजार से खरीद के माध्यम से काफी मात्रा में चलनिधि की आपूर्ति के बावजूद 2012-12 की ति3 में चलनिधि की स्थिति कड़ी हो गई। इसका मुख्य कारण रिज़र्व बैंक में सरकारी नकदी शेष में वृद्धि के कारण हुआ था। आगे, मुद्रास्फीति में आगे और कमी होने पर मौद्रिक नीति में उभरते समष्टि-वित्तीय कारकों पर उचित ध्यान देते हुए वृद्धि पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

कड़े होते चक्र ने मुद्रास्फीति को क्रमिक रूप से प्रभावित किया

IV.1 चालू वित्तीय वर्ष के दौरान मुद्रास्फीति रिज़र्व बैंक के उपयुक्त स्तर से अधिक बनी रहने के बावजूद वृद्धि में काफी कमी आ गई। मौद्रिक नीति में इस उभरती वृद्धि-मुद्रास्फीति गत्यात्मकता का उत्तर स्तरबद्ध सुगमता के माध्यम से दिया गया। 2011-12 की ति4 के दौरान नकदी आरक्षित निधि अनुपात (सीआरआर) में 125 आधार अंकों की कटौती करने के बाद रिज़र्व बैंक ने अप्रैल 2012 में अपनी रिपो दर में 50 आधार अंकों की कटौती की। बढ़ी हुई मुद्रास्फीति और दोहरे घाटे के कारण अप्रैल 2012 से नीतिगत दर को और कम करने की संभावना समाप्त हो जाने के बावजूद वृद्धि की सहायता करने के लिए उत्पादक क्षेत्रों में ऋण के नियोजन में सुधार करने की दृष्टि से पर्याप्त चलनिधि सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त उपाय किए गए। चलनिधि प्रबंधन उपायों के एक भाग के रूप में मौद्रिक और चलनिधि की स्थिति को सुगम बनाने के लिए सीआरआर को दो चरणों में और 50 आधार अंक कम किया गया। साथ ही, अनुसूचित वाणिज्य बैंकों (एससीबी) का सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) कम किया

सारणी IV.1 : प्रमुख नीतिगत दरों में उतार-चढ़ाव

(प्रतिशत)

प्रभावी होने की तारीख	रिवर्स रिपो दर		रिपो दर		आरक्षित नकदी निधि अनुपात*		सांविधिक चलनिधि अनुपात*	
1	2		3		4		5	
मई 3, 2011	6.25	(+0.50)	7.25	(+0.50)	6.00		24	
जून 16, 2011	6.50	(+0.25)	7.50	(+0.25)	6.00		24	
जुलाई 26, 2011	7.00	(+0.50)	8.00	(+0.50)	6.00		24	
सितंबर 16, 2011	7.25	(+0.25)	8.25	(+0.25)	6.00		24	
अक्टूबर 25, 2011	7.50	(+0.25)	8.50	(+0.25)	6.00		24	
जनवरी 28, 2012	7.50		8.50		5.50	(-0.50)	24	
फरवरी 13, 2012	7.50		8.50		5.50		24	
मार्च 10, 2012	7.50		8.50		4.75	(-0.75)	24	
अप्रैल 17, 2012	7.00	(-0.50)	8.00	(-0.50)	4.75		24	
जून 18, 2012	7.00		8.00		4.75		24	
अगस्त 11, 2012	7.00		8.00		4.75		23	(-1.00)
सितंबर 22, 2012	7.00		8.00		4.50	(-0.25)	23	
नवंबर 3, 2012	7.00		8.00		4.25	(-0.25)	23	

कोष्ठकों में दिये गये आंकड़े प्रतिशत अंकों में नीति दरों/अनुपातों में परिवर्तन को दर्शाते हैं।

* : निवल मांग और मीयादी देयताओं का प्रतिशत

गया ताकि निजी क्षेत्र की ऋण स्थिति में सुधार लाया जा सके (सारणी IV.1)।

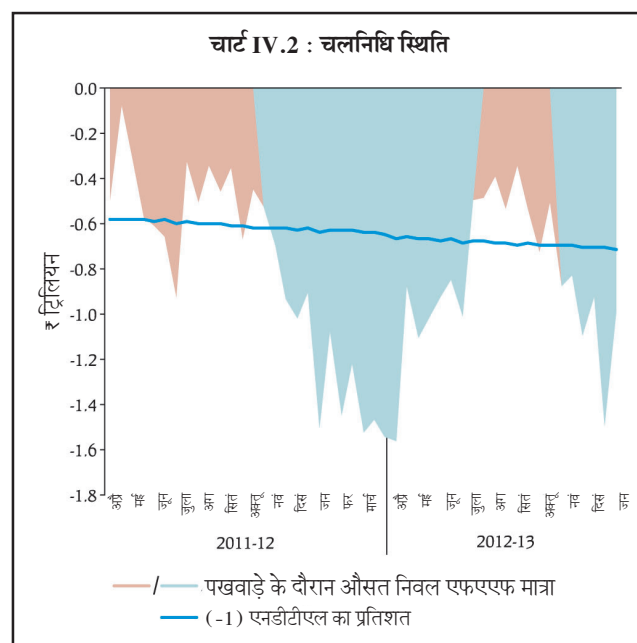
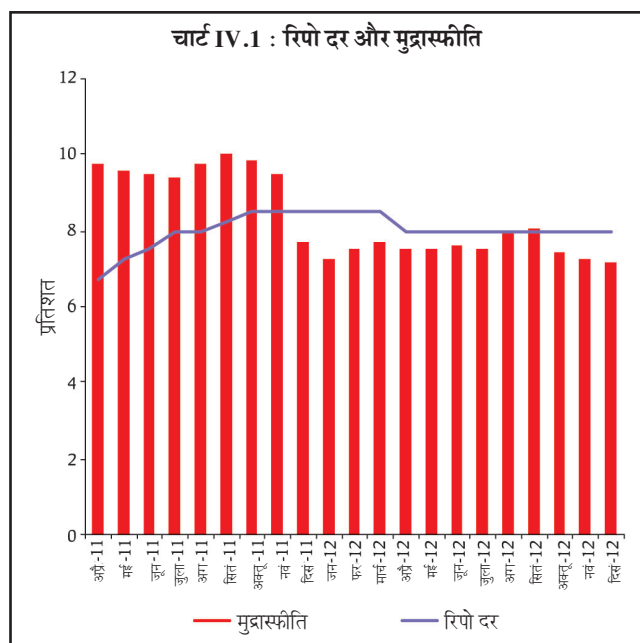
IV.2 इसके अलावा, रिज़र्व बैंक ने दैनिक चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) के माध्यम से चलनिधि की आपूर्ति करने के अलावा खुले बाजार के परिचालनों (ओएमओ) के अंतर्गत नीलामियों का उपयोग किया और लगभग ₹1.1 ट्रिलियन की प्राथमिक चलनिधि की आपूर्ति की और साथ ही 2012-13 में अब तक अनाम व्यापारी प्लेटफार्म (एनडीएस-ओएम) के माध्यम से लगभग ₹229 बिलियन की चलनिधि की आपूर्ति की गई थी। साधनों के दो सेटों अर्थात् अप्रैल से नीतिगत दर को अपरिवर्तित रखना और चलनिधि सुगमता के सक्रिय उपायों से दोहरा लाभ मिला जो कि मुद्रास्फीति में उसके शीर्ष से क्रमिक रूप से कमी आने और ऋण उठाव से नवंबर और दिसंबर 2012 की अधिकतर अवधि में सुधार के चिह्न दिखने से स्पष्ट हो जाता है। किंतु मुद्रास्फीति रिज़र्व बैंक के अनुकूल स्तर से अधिक बनी रही (चार्ट IV.1)।

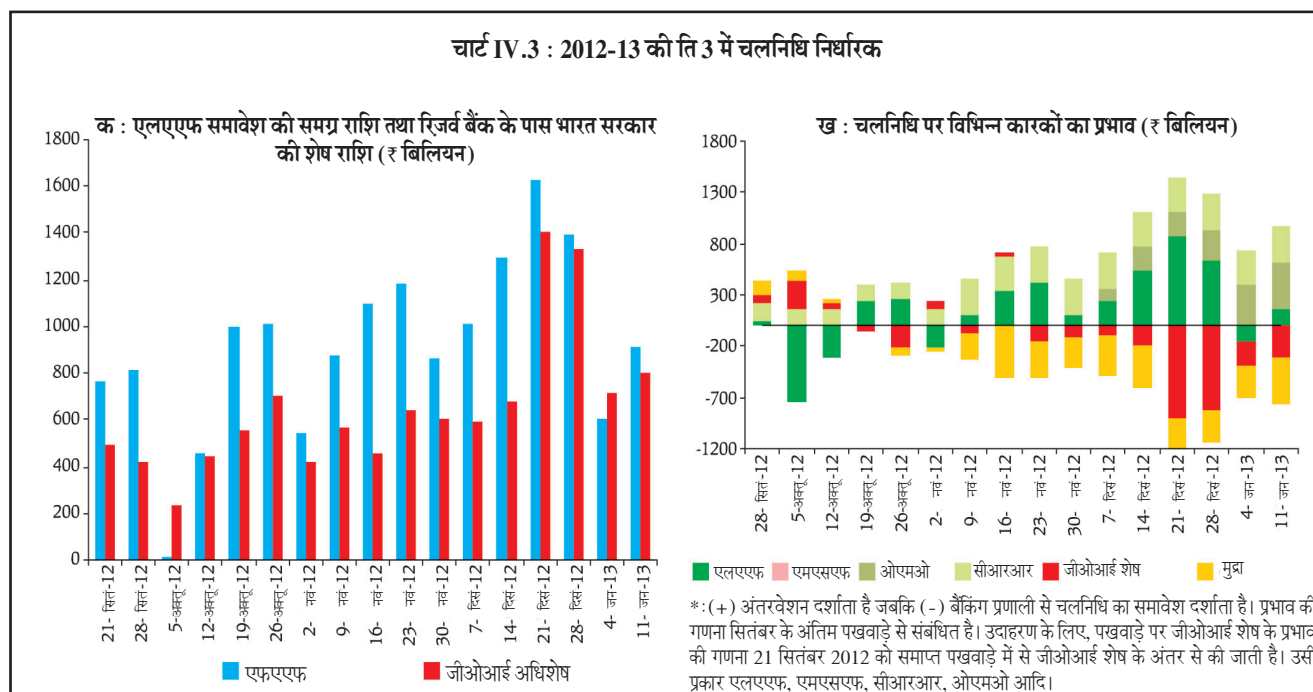
रिज़र्व बैंक ने चलनिधि की कड़ी स्थिति का सामना करने के उपाय किए

IV.3 अप्रैल 2012 से आगे की चलनिधि स्थिति को तीन मुख्य चरणों में बांटा जा सकता है। वित्तीय वर्ष की शुरुआत पिछले वर्ष की अपर्याप्त चलनिधि की स्थिति से हुई जो कि रिज़र्व बैंक के अनुकूलता स्तर के अनुसार नहीं थी। घाटे का प्रबंधन ओएमओ तथा एलएएफ के माध्यम से प्राथमिक

चलनिधि की आपूर्ति और निर्यात वित्त पुनर्वित्त सीमा में वृद्धि के मिश्रित उपायों से किया गया। दूसरे चरण की शुरुआत जुलाई 2012 में हुई जब इन नीतिगत उपायों के परिणामस्वरूप चलनिधि की कमी की स्थिति में सुधार हुआ और यह रिज़र्व बैंक के अनुकूल स्तर के भीतर आ गई और यह स्थिति नवंबर 2012 तक बनी रही। अग्रिम कर बहिर्वाह, त्यौहार के मौसम की मुद्रा मांग ऋण तथा जमा की वृद्धि दरों में अंतर बढ़ने जैसे कारकों से उभरती चलनिधि की कमी की स्थिति पर पूर्वापाय के रूप में रिज़र्व बैंक ने सितंबर 2012 में सीआरआर में 25 आधार अंकों की कटौती की। इसके अलावा अगस्त 2012 से एसएलआर में 100 आधार अंकों की कटौती पहले से ही लागू थी (सारणी IV.1)। नवंबर 2012 से अंतर-बैंक बाजार में चलनिधि की स्थिति कड़ी बनी रही जिसका मुख्य कारण सरकारी नकदी शेषों का निर्माण और संचलनगत मुद्रा में वृद्धि था जिसमें चलनिधि की कमी निवल मांग और मीयादी देयताओं (एनडीटीएल) के (-1) प्रतिशत के रिज़र्व बैंक के अनुकूलता स्तर को पार कर गई थी (चार्ट IV.2)।

IV.4 चलनिधि की इस कमी के समाधान के लिए रिज़र्व बैंक ने विद्यमान समष्टिआर्थिक स्थिति पर विचार करने के बाद 3 नवंबर 2012 से अनुसूचित बैंकों का सीआरआर 25 आधार अंक कम करके उनके एनडीटीएल के 4.25 प्रतिशत कर दिया। इसके परिणामस्वरूप बैंकिंग प्रणाली में लगभग ₹175 बिलियन आ गए। नवंबर 2012 की पहली छमाही के दौरान मुद्रा की मांग में हुई अप्रत्याशित वृद्धि के कारण चलनिधि की कमी की स्थिति





बदतर हो गई थी। दिसंबर 2012 में तिमाही अग्रिम कर बहिर्वाह के कारण चलनिधि में और कमी आ गई (चार्ट IV.3)।

IV.5 चलनिधि की कमी और काफी सरकारी नकदी शेष के निर्माण को देखते हुए रिजर्व बैंक ने लगभग पांच माह के बाद 4 दिसंबर 2012 को सरकारी प्रतिभूतियों के खुले बाजार की क्रय नीलामी का सहारा लिया। रिजर्व बैंक ने माह के दौरान लगभग ₹1.2 ट्रिलियन के औसत से एलएएफ परिचालनों के माध्यम से चलनिधि की आपूर्ति करने के अलावा खुले बाजार के क्रय के माध्यम से ₹391 बिलियन की प्राथमिक चलनिधि की आपूर्ति की।

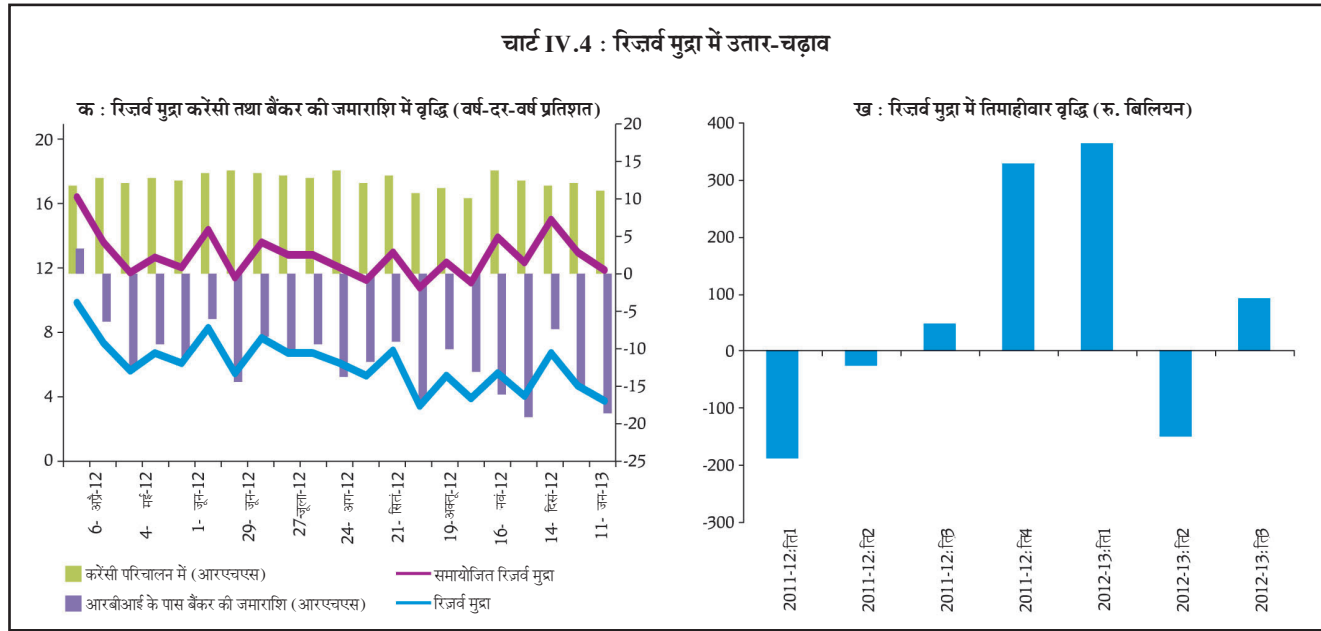
IV.6 सरकारी व्यय वृद्धि के चलते जनवरी 2013 में एलएएफ का सहारा लेने में पिछले माह की तुलना में कमी आई। किंतु यह स्थिति रिजर्व बैंक के अनुकूलता स्तर से निरंतर अधिक बनी रही। रिजर्व बैंक चलनिधि के सक्रिय प्रबंधन के लिए प्रतिबद्ध है। नवंबर 2012 से चलनिधि में काफी कमी रहने के बावजूद मार्जिनल स्थायी सुविधा (एमएसएफ) का सहारा मात्र नवंबर-दिसंबर 2012 के दौरान ही लिया गया। मांग दर सामान्यतः रिपो दर के करीब बनी रही जिसमें कोई विशेष उछाल नहीं आया था जो कि अंतर-बैंक बाजार की गहनता और आघात सहनीयता को दर्शाता है। इससे नई मौद्रिक नीतिगत परिचालन क्रियाविधि का पता चलता है।

सीआरआर के लिए समायोजित आरक्षित मुद्रा 2012-13 की ति3 में अच्छी गति से बढ़ी

IV.7 रिजर्व बैंक द्वारा ओएमओ और एलएएफ के माध्यम से प्राथमिक चलनिधि की व्यापक मात्रा में आपूर्ति के बावजूद 2012-13 की ति3 में आरक्षित मुद्रा वृद्धि में सामान्यतः गिरावट आई (चार्ट IV.4)। स्रोत पक्ष में, सितंबर के अंत से सरकारी नकदी के उच्च शेषों ने केंद्र को रिजर्व बैंक से निवल ऋण में वृद्धि को कम कर दिया (चार्ट IV.3)। घटक पक्ष में, तिमाही के दौरान देखी गई संचलन की मुद्रा की बढ़ती प्रवृत्ति को रिजर्व बैंक ने सीआरआर कटौती से समाप्त कर दिया। किंतु सीआरआर कटौती के पहले दौर के प्रभाव के लिए समायोजित आरक्षित मुद्रा की मात्रा तिमाही के दौरान बढ़ी जबकि पिछली तिमाही में इसमें गिरावट आई थी। सीआरआर कटौती के माध्यम से आबद्ध चलनिधि जारी करने से यह आशा थी कि इससे ऋण निर्माण को प्रोत्साहन मिलेगा और यह बहुगुणक प्रणाली के माध्यम से व्यापक मुद्रा वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालेगा।

व्यापक मुद्रा वृद्धि सांकेतिक पथ से नीचे बनी रही

IV.8 ति3 में व्यापक मुद्रा वृद्धि में कमी आई और यह रिजर्व बैंक के सांकेतिक पथ से नीचे चली गई जिसका मुख्य कारण समग्र जमा की वृद्धि में कमी आना था (सारणी IV.2)। स्रोत पक्ष में, वैश्विक और देशी समष्टिआर्थिक स्थिति ने ऋण वृद्धि को कुछ मंद कर दिया जिसने बहुगुणक



विस्तार को मंद किया जिससे व्यापक मुद्रा वृद्धि को प्रोत्साहन मिलने की आशा थी (चार्ट IV.5)।

IV.9 चुनिंदा 47 बैंकों, सभी एससीबी द्वारा नियोजित कुल खाद्येतर ऋण में जिनका हिस्सा लगभग 95 प्रतिशत होता है, के ऋण नियोजन के आंकड़े सामान्यतः दर्शाते हैं कि औद्योगिक ऋण और सेवा क्षेत्र को ऋण की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि दिसंबर

2012 में पिछले वर्ष की इसी अवधि और सितंबर 2012 की तुलना में कम हो गई थी (चार्ट IV.5b)।

ऋण और जमा वृद्धि के बीच बढ़ा हुआ अंतर चिंता का मामला बना रहा

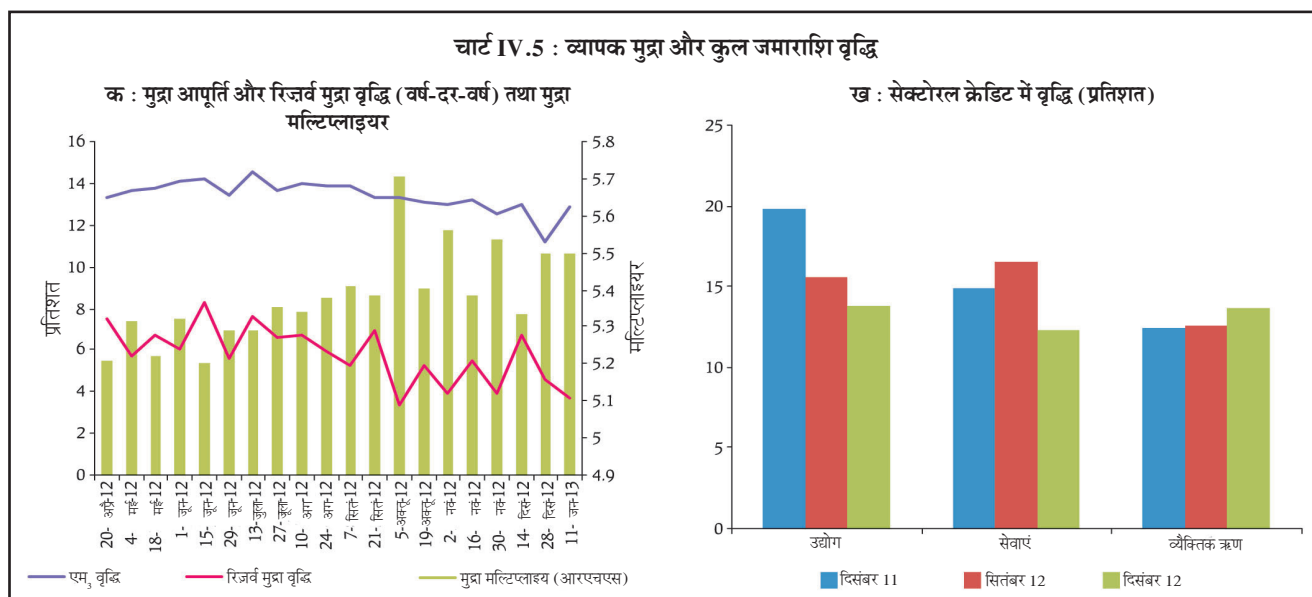
IV.10 2012-13 में ऋण वृद्धि के निधीयन के लिए समग्र जमा में आनुपातिक वृद्धि न होने से आस्ति-देयता अंतर

सारणी IV.2 : मौद्रिक संकेतक

मद	बकाया राशि (रु. बिलियन) 01 जनवरी 2013	वित्तीय वर्ष में घट-बढ़ (प्रतिशत)		वर्ष-दर-वर्ष घट-बढ़ (प्रतिशत)	
		2011-12	2012-13	13 जनवरी 2012	11 जनवरी 2013
1	2	3	4	5	6
रिज़र्व मुद्रा (एम ₀)*	14,795.4	5.4	3.7	12.7	2.0
रिज़र्व मुद्रा (समायोजित)*		5.5	5.9	12.9	10.0
व्यापक मुद्रा (एम ₃)	81,115.7	10.5	10.2	15.7	12.9
एम₃ के प्रमुख घटक					
जनता के पास मुद्रा	11,097.7	9.6	8.2	12.1	11.0
कुल जमाराशियां	70,003.5	10.6	10.6	16.3	13.2
जिसमें से : मांग जमाराशियां	6,886.1	-6.5	-2.3	4.9	1.9
मीयादी जमाराशियां	63,117.4	13.2	12.2	17.9	14.6
एम₃ के प्रमुख स्रोत					
सरकार को निवल बैंक ऋण	26,529.4	14.6	11.9	24.5	16.7
वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक ऋण	54,282.0	10.3	9.4	16.7	16.1
बैंकिंग क्षेत्र की निवल विदेशी आस्तियां	16,293.4	9.5	5.5	12.0	6.8

टिप्पणी : आंकड़े अर्न्ततम हैं।

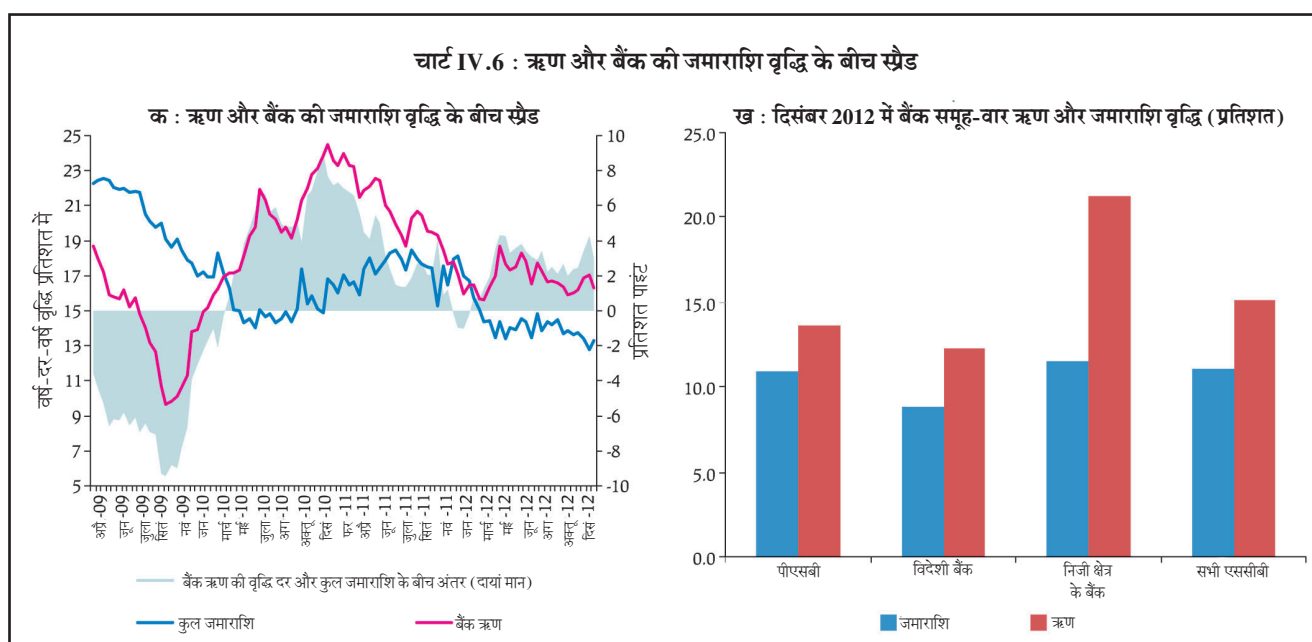
* : आंकड़े 18 जनवरी 2013 के हैं।



बढ़ गया जो कि ऋण-जमा अनुपात में वृद्धि से भी देखा जा सकता है (चार्ट IV.6)। समग्र जमा के मुख्य घटक सावधि जमा में गिरावट का मुख्य कारण सावधि जमा पर वास्तविक ब्याज दर कम होती जाना हो सकता है। इसके अलावा, ऋण और जमा वृद्धि में अंतर बढ़ने से यह संभावना है कि बैंक इस अंतर को पाटने के लिए अंतर-बैंक बाजार का सहारा लेंगे। पहले से ही कम चलनिधि की स्थिति होने के कारण बढ़ता अंतर चिंता की बात है क्योंकि इससे चलनिधि में और कमी आ सकती है।

आस्ति गुणवत्ता संबंधी चिंता बढ़ने से जोखिम से बचने की प्रवृत्ति ऋण को प्रभावित कर रही है

IV.11 मांग में मंदी के अलावा, पिछली तिमाहियों की तुलना में सरकारी क्षेत्र के बैंकों की कम ऋण वृद्धि का एक मुख्य कारण उनकी आस्ति गुणवत्ता में गिरावट आना हो सकता है (सारणी IV.3)। बैंकिंग क्षेत्र के आस्ति गुणवत्ता संकेतकों, जिनमें 2011-12 के दौरान गिरावट हुई थी, में वित्तीय वर्ष में अब तक और गिरावट हुई (सारणी IV.4)। 2012-13 की ति2 के दौरान बिगड़ती आस्ति गुणवत्ता में सरकारी क्षेत्र के बैंकों का मुख्य हिस्सा था जिनका बैंक



सारणी IV.3 : अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों से ऋण प्रवाह

(बिलियन)

बैंक ऋण	11 जनवरी 2013* को बकाया राशि	घट-बढ़ (वर्ष-दर-वर्ष)			
		13 जनवरी 2012 को		11 जनवरी 2013 को*	
		राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
1. सरकारी क्षेत्र के बैंक*	36,624.8	4,462.6	16.2	4,630.8	14.5
2. विदेशी बैंक	2,536.0	364.2	19.1	260.4	11.4
3. निजी बैंक	9,928.6	1,148.0	16.8	1,930.5	24.1
4. सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक@	50,427.9	6,139.2	16.5	7,081.1	16.3

* : सरकारी क्षेत्र के बैंकों में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर। @ क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शामिल हैं।

टिप्पणी : 11 जनवरी 2013 की स्थिति का डाटा अर्नातिम है।

अग्रिम में सर्वाधिक हिस्सा होता है। आस्ति गुणवत्ता और समष्टिआर्थिक स्थिति में गिरावट से बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम से बचने की प्रवृत्ति बढ़ी। इसके कारण, पोर्टफोलियो व्यापक सरकारी बाजार उधार के आधार पर ऋण निर्माण से हटकर एसएलआर प्रतिभूतियों में निवेश में शिफ्ट हो गया (चार्ट IV.7)।

मौद्रिक नीति का उधार दरों पर प्रभाव होने में समय लगने से भी ऋण बाजार में संरचनात्मक कठोरता का पता चलता है

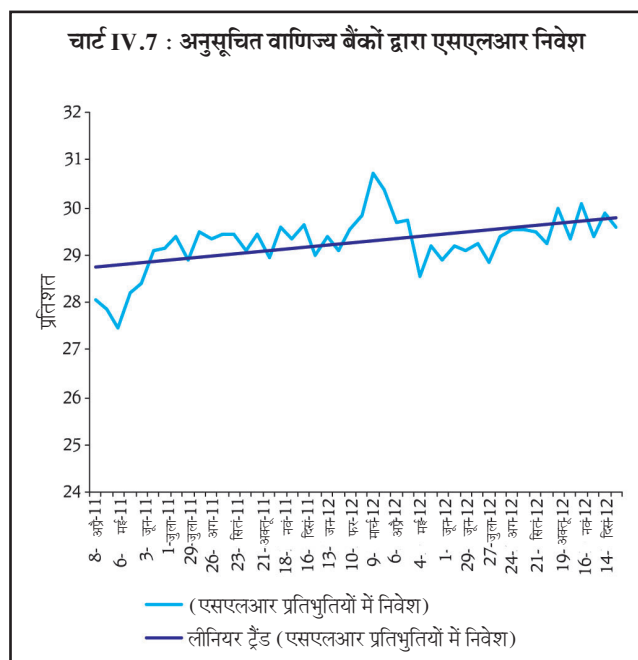
IV.12 अप्रैल 2012 में नीतिगत दर (रिपो दर) में 50 आधार अंकों की कटौती और बाद में अगस्त 2012 में एसएलआर में 100 आधार अंकों की कटौती और जनवरी-नवंबर 2012

सारणी IV.4 : बैंक समूह-वार एनपीए अनुपात

बैंक समूह	जून-12					सित-12				
	सकल अग्रिम की तुलना में सकल एनपीए (%)	निवल अग्रिम की तुलना में निवल एनपीए (%)	स्लिपेज अनुपात #	सकल अग्रिम की तुलना में पुनर्संरचनागत मानक आस्ति (%)	सीआरएआर (%)	सकल अग्रिम की तुलना में सकल एनपीए (%)	निवल अग्रिम की तुलना में निवल एनपीए (%)	स्लिपेज अनुपात #	सकल अग्रिम की तुलना में पुनर्संरचनागत मानक आस्ति (%)	सीआरएआर (%)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
सरकारी क्षेत्र के बैंक	3.57	1.75	3.49	6.67	12.78	4.02	2.02	2.89	7.34	12.33
विदेशी बैंक	2.90	0.83	2.43	0.08	15.72	2.90	0.76	1.38	0.16	17.07
नए निजी क्षेत्र बैंक	2.19	0.45	1.31	1.06	16.11	2.1	0.45	1.12	1.05	16.34
पुराने निजी क्षेत्र बैंक	1.92	0.61	0.02	3.83	13.82	2.16	0.81	1.61	3.85	13.78
सभी बैंक *	3.25	1.45	3.04	5.37	13.74	3.59	1.66	2.50	5.86	13.60

स्रोत: अद्यतन किया गया ओएसएमओएस डेटाबेस. * लैब शामिल है।

विशेष विश्लेषण के लिए बैंकों से प्राप्त किए गए डेटा पर आधारित। स्लिपेज अनुपात के सितंबर 12 के आंकड़ों को वार्षिकीकृत किया गया है।



के दौरान सीआरआर में 175 आधार अंकों की कटौती से संकेत लेते हुए अनेक बैंकों ने अपनी जमा और आधार दरों को 2012-13 (15 जनवरी 2013 तक) के दौरान कम कर दिया। तदनुसार, बैंकों की मॉडल जमा दर और मॉडल आधार दर में वित्तीय वर्ष में अब तक गिरावट आई है। इन नीतिगत उपायों का प्रभाव अब तक पता नहीं चला है किंतु उपलब्ध आंकड़ों से पता चलता है कि नीतिगत दरों का प्रभाव मुद्रा बाजार दरों की तुलना में कम रहा है जो कि ऋण बाजार की संरचनात्मक कड़ाई को दर्शाता है।

बैंकेतर देशी स्रोतों से वाणिज्य क्षेत्र की ओर संसाधन प्रवाह में वृद्धि हुई

IV.13 वित्तीय वर्ष में अब तक (11 जनवरी 2013 तक) वाणिज्यिक क्षेत्र को वित्तीय संसाधनों का कुल प्रवाह पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में अधिक था (सारणी IV.5)। इस प्रवाह

सारणी IV.5 : वित्तीय संसाधनों का वाणिज्यिक क्षेत्र में प्रवाह

(₹ बिलियन)

	अप्रैल-मार्च			1 अप्रैल से 11 जनवरी	
	2009-10	2010-11	2011-12	2011-12	2012-13
1	2	3	4	5	6
अ. समायोजित खाद्येतर बैंक ऋण (एनएफसी)	4,786	7,110	6,764	3,953	4,397
i) खाद्येतर ऋण	4,670	6,815	6,525	3,705	4,058
जिसमें से : पेट्रोलियम और उर्वरक ऋण	100	-243	171	7	0 ^
ii) एससीबी द्वारा गैर-एसएलआर निवेश	117	295	239	248	338
आ. गैर बैंकों से ऋण प्रवाह (आ1+आ2)	5,850	5,341	5,338	4,154	5,232
आ1. देशी स्रोत	3,652	3,011	3,034	1,913	2,951
1. वित्तेतर संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक निर्गम	320	285	45	40	103 *
2. वित्तेतर संस्थाओं द्वारा सकल निजी स्थानन	1,420	674	558	328	442 P+
3. बैंक से इतर द्वारा अभिदान किए गए वाणिज्यिक पत्रों का निवल निर्गम	261	68	100	393	778 *
4. आवास वित्त कंपनियों द्वारा निवल ऋण	285	428	530	248	387 ^
5. रिजर्व बैंक द्वारा विनियमित 4 अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाओं-नाबार्ड, एनएचबी, सिडबी और एक्विजिमेंट बैंक द्वारा प्रदत्त सकल सहायता	338	400	469	215	184 *
6. प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमाराशियां न लेने वाली एनबीएफसी (बैंक ऋण घटाकर)	607	795	912	480	716 +
7. एलआईसी का कारपोरेट ऋण, बुनियादी ढांचा तथा सामाजिक क्षेत्र में निवल निदेश	422	361	419	210	341 *
आ2. विदेशी स्रोत	2,198	2,330	2,304	2,241	2,281
1. बाह्य वाणिज्यिक उधार/एफसीसीबी	120	555	421	309	406 *
2. एडीआर/जीडीआर निर्गम, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को छोड़कर	151	92	27	26	10 ^
3. विदेश से अल्पावधि ऋण	349	502	306	269	519 +
4. भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	1,578	1,181	1,550	1,637	1,346 ^
इ. संसाधनों का कुल प्रवाह (अ+आ)	10,636	12,451	12,102	8,107	9,629
ज्ञापन मदें:					
म्यूचुअल फंडों द्वारा ऋण (गिल्ट से इतर) योजनाओं के माध्यम से जुटाए गए निवल संसाधन	966	-367	-185	-54	699 *

नोट: ^ : 30 नवंबर 2012 तक + : 30 सितंबर 2012 तक * : दिसंबर 2012 तक पी: अनंतिम

वृद्धि में बैंक और बैंकेतर - दोनों स्रोतों का योगदान था हालांकि बैंकेतर का योगदान अधिक था। देशी स्रोतों के अंतर्गत, एससीबी द्वारा खाद्येतर ऋण और एसएलआर से भिन्न निवेश, वाणिज्यिक पत्रों का निवल निर्गम, आवास वित्त कंपनियों द्वारा निवल ऋण, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमाराशि स्वीकार न करने वाली एनबीएफसी के मामले में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में काफी वृद्धि देखी गई। निधीयन के विदेशी स्रोतों (दिसंबर 2012 तक) में भी पिछले वर्ष की तुलना में कुछ वृद्धि हुई मुख्य कारण अधिक बाह्य वाणिज्यिक उधार/विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांड और विदेश से अल्पकालिक ऋण था। किंतु एफडीआई, जो कि पूंजी अंतर्वाहों का सर्वाधिक स्थिर स्रोत माना जाता है, में इस अवधि के दौरान गिरावट हुई।

वृद्धि-मुद्रास्फीति गत्यात्मकता में परिवर्तन से मौद्रिक स्थिति प्रभावित हो सकती है

IV.14 जनवरी 2012 से मौद्रिक नीति में चलनिधि सुगमता के प्रयासों और नीतिगत दर कटौती के संयुक्त माध्यम से

वृद्धि-मुद्रास्फीति गत्यात्मकता को संतुलित करने के प्रयास किए गए हैं। इससे सीआरआर कम हुआ और खुले बाजार के क्रय के माध्यम से प्राथमिक चलनिधि की आपूर्ति हुई। रिजर्व बैंक ने अप्रैल 2012 में 50 आधार अंक की रिपो दर कटौती के बाद अब तक यथास्थिति बनाए रखी है क्योंकि मुद्रास्फीति अनुकूल स्तर से अधिक थी और राजकोषीय तथा चालू खाता असंतुलनों आवश्यक समायोजन की कमी थी। आगे, यदि मुद्रास्फीति की अधोमुखी प्रवृत्ति बनी रहती है तो मौद्रिक नीति का केंद्र बदल सकता है और इसमें वृद्धि में कमी पर ध्यान दिया जा सकता है। किंतु निश्चित नीतिगत दिशा मुद्रास्फीति और वृद्धि की उभरती गत्यात्मकता, मौद्रिक और ऋण समुच्चयों की स्थिति और अन्य समष्टिआर्थिक तथा वित्तीय मानदंडों पर निर्भर करेगी।